विजेता जागो- प्रार्थना कैलेंडर जनवरी 2023

1. साहसी बनें – हमें कभी-कभी ऐसा महसूस हो सकता है कि बुराई और घृणा अंततः प्रेम और करुणा पर विजय प्राप्त कर लेंगे। लेकिन परमेश्वर का शुक्र है, वह हमें विश्वास दिलाता है कि मामला बिल्कुल विपरीत है। (यूहन्ना 16:33) साहसी बनो! हम परमेश्वर के वादों में निश्चिंत रह सकते हैं।

2. संगति - एक शत्रुतापूर्ण दुनिया में यीशु के अनुयायी के रूप में प्रबल होने के लिए मसीही भाइयों और बहनों के साथ आध्यात्मिक संगति महत्वपूर्ण है। यदि आपके पास ऐसी संगति है, तो परमेश्वर को धन्यवाद दें। यदि नहीं, तो प्रार्थना करें कि वह आपके लिए एक प्रदान करे। (इब्रानियों 10:24,25)।

3. एक साधारण गवाही - हम कभी-कभी दूसरे लोगों से मसीह के बारे में बात करने से डरते हैं क्योंकि हमें लगता है कि परमेश्वर के वचन के बारे में हमारा ज्ञान सीमित है। हालांकि, सरल अक्सर सबसे अच्छा होता है। परमेश्वर का धन्यवाद है कि आप लोगों को उनके बारे में केवल यह बता कर बात कर सकते हैं कि यीशु ने आपके लिए क्या किया है। (यूहन्ना 9:25)

4. पूरा हुआ - मरने से पहले यीशु के प्रसिद्ध अंतिम शब्द थे, "पूरा हुआ" हालांकि, जो अभी तक पूरा नहीं हुआ है, वह दुनिया के सभी देशों और हर जातीय समूह तक सुसमाचार पहुंचाना है। प्रार्थना करें कि परमेश्वर आपको दिखाए कि कैसे आप महान आज्ञा को पूरा करने में योगदान दे सकते हैं। (लूका 24:47)

5. साधारण – मरियम और यूसुफ गलील के पिछले इलाके के एक छोटे से गाँव के मामूली लोग थे। मामूली लेकिन महत्वहीन नहीं! निर्णायक यह था कि परमेश्वर ने उनका उपयोग कैसे किया। ऐसा आज भी है। परमेश्वर आपके जीवन का उपयोग कैसे करेगा यह तो अंत में ही देखा जा सकता है। बस आज विश्वासयोग्य रहो। (याकूब 4:6)

6. रहस्य – “इसी कारण उसे अपने भाइयों के समान बनाना पड़ा...” (इब्रा. 2:17,18)। परमेश्वर ने अपने प्रिय पुत्र, यीशु से सर्वोच्च अपेक्षा रखी, ताकि वह अपने कष्टों के माध्यम से मानव समानता स्थापित कर सके। उसी तरह, परमेश्वर अभी भी अपने प्यारे बच्चों की कष्टों का उपयोग दूसरों के लिए सेतु बनाने के लिए करता है।

7. आनन्दित - "प्रभु में सदा आनन्दित रहो!" (फिलि. 4:4क) कई बार जीवन में परिस्थितियाँ आनन्दित होने का कारण नहीं होती हैं। लेकिन जब हम सर्वशक्तिमान परमेश्वर से जो हमसे प्यार करता है घनिष्ठ रूप से जुड़ जाते हैं, तो कोई भी चीज़ हमें उस गहरे आनंद और सुरक्षा से वंचित नहीं कर सकती जो वह प्रदान करता है। इसलिए, भरोसा करना और पालन करना जारी रखें।

8. याद रखें - "मैं फिर से कहता हूँ: आनन्दित रहो!" (फिलि. 4:4ख) हम भुलक्कड़ हैं। इसलिए, हम भजन सहिंता 103:2 में पढ़ते हैं, "हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह, और उसके किसी उपकार को न भूलना।" परमेश्वर की भलाइयों को स्मरण रखने से वर्तमान चुनौतियों का सामना करने का साहस मिलता है। उसे अपने विश्वास और जीवन के दृष्टिकोण की नींव बनने दें।

9. सौम्यता- "तेरी कोमलता सब मनुष्यों पर प्रगट हो" (फिलि. 4:5)। क्योंकि हम यीशु के हैं, हम हृदय से आनन्दित हो सकते हैं और दूसरों के प्रति नम्रता दिखा सकते हैं। जब हम परमेश्वर को हमें आशीषित और परिवर्तित करने की अनुमति देते हैं, तो हमारा जीवन उन लोगों के लिए एक निमंत्रण बन जाता है जो हमें देखते हैं कि वे भी उस पर विश्वास करें।

10. चिंताओं से छुटकारा - "किसी भी बात की चिन्ता मत करो; परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएँ।" (फिलि. 4:6)। परमेश्वर के लिए कुछ भी असंभव नहीं है। हम वह सब कुछ छोड़ सकते हैं जो हमें प्रभु के साथ परेशान करता है और उसके समाधान के लिए धन्यवादी अपेक्षा में प्रतीक्षा करें।

11. शांति - "तब परमेश्वर की शान्ति, जो सारी समझ से परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरिक्षत रखेगी।" (फिलि. 4:7)। यीशु के साथ, मैं अनसुलझे प्रश्नों और समस्याओं को संभाल सकता हूँ। यह उनकी शांति है जो मुझे शांत और आश्वस्त रहने में सक्षम बनाती है। इसलिए आनन्द मनाओ; चिंता को "न" कहें और चाहे कुछ भी हो उस पर भरोसा करें।

12. धन्य - प्रिय प्रभु, मैं हमेशा अपनी समझ का पालन करने और अपने नियम बनाने के लिए परीक्षा में पड़ जाता हूं। कृपया पहले आपको खोजने और आपकी इच्छा के लिए समर्पित होने में मेरी मदद करें। ''धन्य है वह मनुष्य जो यहोवा का भय मानता है, और उसकी आज्ञाओं से अति प्रसन्न होता है'' (भजन 112:1)।

13. विरासत - अपने बच्चों के लिए एक रोल मॉडल बनना और उन्हें बुद्धिमानी से चुनाव करने के लिए प्रोत्साहित करना हमारा सौभाग्य है। हे प्रभु, कृपया मुझे ऐसा पिता बनने में मदद करें जो आपका सम्मान करता हो और जो आने वाली पीढ़ी के लिए आध्यात्मिक विरासत छोड़ सके। “उसके बच्चे देश में पराक्रमी होंगे; सीधे लोगों की पीढ़ी आशीष पाएगी” (भजन 112:2)।

14. माध्यम - परमेश्वर, इस इस दुनिया की तुलना में आपके पास बहुत कुछ है देने के लिए। मुझे ऐसा पुरुष बनने दे जो तेरी आशीषों का माध्यम हो और जिसका चरित्र और व्यवहार मेरे परिवार और दोस्तों को बहुत समृद्ध करे। ``उसके घर में धन सम्पत्ति रहती है; और उसका धर्म सदा बना रहेगा।” (भजन 112:3)।

15. आशा - सुसमाचार आशा का संदेश है। मसीह ने हमें क्रूस पर छुड़ाया और वह हर एक को धर्मी बनाता है जो उस पर विश्वास करता है। उसे आपके द्वारा अपना जीवन जीने दें और आज आशा का स्रोत बनें। "सीधे लोगों के लिये अन्धकार के बीच में ज्योति उदय होती है; वह अनुग्रहकारी, दयावन्त और धर्मी होता है।" (भजन 112:4)।

16. उदारता - परमेश्वर उदार व्यक्ति से प्रेम करते हैं। वह ध्यान देता है और दूसरों की देखभाल करने वालों को पुरस्कृत करने का वादा करता है। "जो पुरुष अनुग्रह करता और उधार देता है, उसका कल्याण होता है, वह न्याय में अपने मुक़द्दमें को जीतेगा।" (भजन 112:5)। एक संवेदनशील हृदय के लिए प्रार्थना करें और जो जरूरतमंद आपके आस-पास हैं उन लोगों के लिए हाथ बढ़ाएं।

17. धर्मी -एक धर्मी, परमेश्वर को जान्ने वाले व्यक्ति का प्रभाव आश्चर्यजनक होता है। उसका जीवन आज और अनंत काल के लिए मायने रखता है। “वह तो सदा तक अटल रहेगा; धर्मी का स्मरण सदा तक बना रहेगा।” (भजन 12:6)। हे प्रभु, मुझे एक ऐसा मनुष्य बनाइए जो अपने वादों पर दृढ़ रहता है और जो दूसरों को जीवन के तूफानों में आप पर भरोसा करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

18. बुरी खबर - जैसे-जैसे लड़ाइयों और युद्ध, अकाल, महामारी और भूकंप की अफवाहों के साथ अंत समय के संकेत बढ़ते हैं, विश्वासी पुरुष अपने प्रभु के आने की बात जोहता है। “वह बुरे समाचार से नहीं डरता; उसका हृदय यहोवा पर भरोसा रखने से स्थिर रहता है।” (भजन 112:7)। हे प्रभु, मुझे इन परेशान करने वाले समयों में आपका गवाह बनने के लिए मदद करें।

19. सुरक्षित –यदि आप एक ऐसे व्यक्ति हैं जो परमेश्वर को अपने जीवन को निर्देशित करने की अनुमति देता है, तो आप भजन 112:8 के वादे का अनुभव करते हैं, "उसका हृदय सम्भला हुआ है, इसलिये वह न डरेगा, वरन् अपने शत्रुओं पर दृष्टि करके सन्तुष्ट होगा।" हम ऐसे लोगों से घिरे हुए हैं जो भय और बिना आशा के लकवाग्रस्त हैं। परिवर्तन करने के लिए प्रार्थना करें। आपको सुरक्षित बनाता है और आपको आशा देता है उसे आज दूसरों के साथ साझा करें।

20. आगे बढ़ाओ -जब हम परमेश्वर से अपने पूरे मन से प्रेम करते हैं, तो वह हमें दूसरों से भी प्रेम करने में सक्षम करेगा। एक ऐसा मनुष्य बनने के लिए प्रार्थना करें जो आज परमेश्वर के प्रेम को प्रसारित करता है। उद्धार का सुसमाचार फैलाओ और दूसरों का भला करो। "उसने उदारता से दरिद्रों को दान दिया हैं, उसका धर्म सदा बना रहेगा" (भजन 112:9)।

21. अब्बा पिता - गलातियों 4:6 में प्रेरित पौलुस परमेश्वर के साथ हमारे घनिष्ठ संबंध को व्यक्त करने के लिए "अब्बा पिता" अभिव्यक्ति का उपयोग करता है। प्रभु की उपस्थिति में रहने का क्या ही सौभाग्य है! प्रार्थना करें कि माता-पिता के रूप में आपके बच्चों को भी आपके साथ घनिष्ठ संबंध में रहने का आनंद मिले! इस संबंध को हमेशा खुला रखें।

22. यीशु तक पहुंचाना - पिता के रूप में, हमारे लिए अपने बच्चों को यीशु के पास लाना सर्वोच्च सम्मान की बात है, जैसा कि मत्ती 19:13 में लिखा है। परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह आपके बच्चों को आशीष दे। आराधना और प्रार्थना के समय में उनका नेतृत्व करें और जब आप बाइबल का अध्ययन करते हैं और एक साथ प्रार्थना का मधुर समय बिताते हैं तो ईश्वरीय सिद्धांतों के मूल्यों को उनके साथ बांटे।

23. प्रशंसा - कई संस्कृतियों में पुरुष उन महिलाओं के बारे में टिप्पणी करते हैं जिनसे वे मिलते हैं या जिनके साथ रहते हैं। श्रेष्ठगीत 4:7 में एक उदाहरण है कि कैसे एक पति अपनी पत्नी की प्रशंसा कर सकता है: "हे मेरी प्रिया, तुम सबसे सुन्दर हो! तुम में कोई दोष नहीं।" प्रार्थना करें कि आपके होठों के शब्द आपकी पत्नी को सम्मानित और प्रसन्न महसूस कराएँ!

24. खजाना - सबसे बड़ा खजाना पैसे या कीमती धातु से नहीं बनता है। बहुत से लोग भौतिक संपत्ति या प्रसिद्धि के बदले सबसे कीमती खजाना अर्थात अपने परिवार को खो देते हैं। इसलिए, प्रार्थना करें कि जो वास्तविक मूल्य का है उसका उचित दृष्टिकोण रखने के लिए आप सावधान रहें। (मत्ती 6:21)

25. कौशल - बाइबल सिखाती है कि हमारा रोज़गार प्रभु की ओर से एक उपहार है, और पवित्र आत्मा आपके पेशे के लिए आपको कौशल देकर सक्षम और मार्गदर्शन करता है। निर्गमन 35:31 में उदाहरण देखें, जहां यहोवा ने बसलेल को निपुणता, योग्यता और ज्ञान दिया। आप भी प्रभु से प्रेरणा और उस कार्य को अच्छी तरह से करने की क्षमता के लिए प्रार्थना कर सकते हैं जो आज आपके सामने है।

26. आराधना - "यहोवा के नाम की महिमा करो; पवित्रता से शोभायमान होकर यहोवा को दण्डवत् करो।" (भजन 29:2)। परमेश्वर, हमारी इच्छा एक परिवार के रूप में और चर्च के साथ मिलकर आपकी प्रशंसा करना है, यह मानना कि आप कौन हैं - सर्वशक्तिमान, पवित्र और दयालु। आप आराधना के मध्य में रहते हैं! हम आपके नाम की आराधना करते हैं!

27. उत्तरदायित्व- “जो मार डाले जाने के लिये घसीटे जाते हैं उनको छुड़ा; और जो घात किए जाने को हैं उन्हें मत पकड़ा।” (नीति. 24:11)। क्रूस पर यीशु मसीह ने मनुष्य जाति को अनन्त दण्ड और मृत्यु से छुटकारा दिलाया। उस पर विश्वास करने से व्यक्ति अनन्त जीवन प्राप्त करता है। जिम्मेदारी स्वीकार करें। सुसमाचार बांटे।

28. मर्दानगी - “जागते रहो, विश्वास में स्थिर रहो, पुरुषार्थ करो, बलवन्त होओ। 14जो कुछ करते हो प्रेम से करो।” (1 कुरिन्थियों 16:13-14)। लोग यूं ही चरित्रवान नहीं हो जाते, लेकिन उन्होंने अपनी इच्छा का प्रयोग किया है। उन्होंने यह जानना सीखा है कि क्या सही है, और वे परमेश्वर के वचन का पालन करने में प्रशिक्षित हैं। परमेश्वर का ऐसा मनुष्य बनने के लिए प्रार्थना करें।

29. परमेश्वर का भय - "यहोवा का भय मानना बुद्धि का मूल है; बुद्धि और शिक्षा को मूढ़ ही लोग तुच्छ जानते हैं।" (नीतिवचन 1:7)। परमेश्वर का आदरपूर्ण भय हमारे अपने भले के लिए है। यह हमें पाप से दूर रखता है और हमें उसकी आज्ञाओं का पालन करने की ओर ले जाता है। परमेश्वर हमारी आराधना के योग्य है। प्रेम में, उसने अपने पुत्र के बलिदान के द्वारा हमारे उद्धार का प्रबन्ध किया।

30. सरकार- "...और प्रभुता उसके कंधों पर होगी" (यशा. 9:6)। यहां तक कि अगर ऐसा लगता है कि इस दुनिया में निर्णय उन पर निर्भर करते हैं जिनके पास सबसे अधिक शक्ति और प्रभाव है, तो प्रोत्साहित हों, अंतिम बात हमारे परमेश्वर की ओर से होगी। ऐसा समय में उन सभी पुरुषों और महिलाओं के लिए प्रार्थना करें जो सरकार के साथ काम करते हैं।

31. प्रार्थना - "किसी भी बात की चिन्ता मत करो; परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएँ।" (फिलि. 4:6)। दर्दनाक घटनाएं, पारिवारिक इतिहास, स्वास्थ्य समस्याएं और नकारात्मक सोच चिंता को बढ़ा सकती हैं। सही निर्णय लें। अपनी समस्याओं को प्रभु को सौंप दें और उसके प्रावधानों की प्रतीक्षा करें।